

भगत जयदेव - सबद १
परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥
रागु गूजरी, भगत जैदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ५२६

परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥
परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥ १ ॥
केवल राम नाम मनोरमं ॥
बदि अमृत तत मइअं ॥
न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअं ॥ १ ॥ रहाउ ॥
इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ॥
भव भूत भाव समब्यिअं परमं प्रसंनमिदं ॥ २ ॥
लोभादि द्रिसटि पर ग्रिहं जदिबिधि आचरणं ॥
तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥ ३ ॥
हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥
जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥ ४ ॥
गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥
जैदेव आइउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ॥ ५ ॥ १ ॥

सार: अज्ञात, अकसर जिज्ञासा जगाता है जिससे उसकी खोज की प्रेरणा मिलती है या जब उसे समझ नहीं पाते तब भय पैदा करता है। अनेक भय के मूल में मृत्यु का भय निहित है जो सांस्कृतिक और वंशानुगत मान्यताओं से आकार लेता है और जीवन-मृत्यु के प्रति हमारी धारणा को प्रभावित करता है। यह दृष्टिकोण या तो हमारी समझ को तीव्र कर सकते हैं जिससे हम नश्वरता को स्वाभाविक रूप से स्वीकार कर सकें या इसे विरोध के रूप में प्रस्तुत करके चिंता को और गहरा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, बुढ़ापे से डरने वाला व्यक्ति अपनी युवावस्था को बनाए रखने के लिए अत्यधिक चिंतित हो सकता है और लगातार अपने पतन के बारे में सोचता है। इसके विपरीत, जीवन के प्राकृतिक चक्र को स्वीकार करके, वह ज्ञान, अनुभवों और वर्तमान क्षण की गहराई से सराहना करना

शुरू कर सकते हैं। जब भय हमारे जीवन पर हावी हो जाता है तब हम टालमटोल और असुविधा के चक्र में फंस जाते हैं। फिर भी, परिवर्तन का स्वागत करके, हम इन बंधनों से मुक्त हो सकते हैं और अधिक संतुष्टिदायक जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥

शाश्वत स्रोत सर्वव्यापी चेतना का प्रतिनिधित्व करता है जो गुणों से समृद्ध आदिम वास्तविकता को मूर्त रूप देता है। अस्तित्व का यह सार ही हर उस चीज़ की नींव है जो मौजूद है और यह हमें हर चीज़ के आपसी जुड़ाव की याद दिलाता है।

परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥ १॥

परम स्रोत अद्भुत है और भौतिक अस्तित्व से परे है, सर्वव्यापी एकता किसी भी वैचारिक माप से दूर है। यह ऐसी चेतना को दर्शाता है जो किसी विचार, रूप या अवधारणा तक सीमित नहीं है। (१)

केवल राम नाम मनोरमं ॥

केवल उस सर्वव्यापी चेतना की एकता पर चिंतन करने से सहज आनंद की प्राप्ति होती है। यह उस मानसिकता को दर्शाता है जो ऐसी अवस्था में स्थिर हो जाती है जहाँ विभाजन मिट जाता है और पूर्णता का भाव स्वाभाविक रूप से जागृत होता है।

बदि अमृत तत मइअं ॥

इसे व्यक्त करना अमृत-तुल्य रस का स्वाद लेने जैसा अनुभव होता है जो अस्तित्व के सार से ओत-प्रोत है। यह ऐसे विचार को दर्शाता है जिसमें प्रत्येक शब्द आंतरिक सामंजस्य की मिठास को समेटे, बाहरी एकता के माध्यम से व्यक्त होता है।

न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअं ॥ १॥ रहाउ ॥

गहन चिंतन के माध्यम से, जन्म, बुढ़ापे और मृत्यु के भय से जुड़ी नकारात्मकता अब हमें परेशान नहीं करती। यह निडरता ऐसी आध्यात्मिक वृद्धि का संकेत है जो हमें परिवर्तन और नश्वरता को,

विशाल निरंतरता के भीतर होने वाली स्वाभाविक गतियों के रूप में देखने में सक्षम बनाती है।
(१)(विराम)

इच्छासि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ॥

यदि, पतन के भय पर विजय प्राप्त करना है, तब मन की उस आनंदमय अवस्था का सम्मान करें जो नेक इरादों को पोषित करती है। आत्म-खोज की यह यात्रा ऐसा सहायक वातावरण बन सकती है जो हमारे दृष्टिकोण को बदल कर हमारे कार्यों को बेहतर दिशा प्रदान करती है।

भव भूत भाव समब्धिं परमं प्रसन्नमिदं ॥२॥

जब भय, अतीत के संस्कार और भावनात्मक आवेग शांत हो जाते हैं, तब मन परम आनंद और शांति की अवस्था में स्थिर हो जाता है। यह शांतिपूर्ण स्थान स्पष्टता प्रदान करता है जिससे आंतरिक सामंजस्य स्थापित होता है। (२)

लोभादि द्विसटि पर ग्रिहं जदिबिधि आचरणं ॥

यदि मन लोभ से प्रेरित होकर दूसरों की वस्तुओं की इच्छा करता है तो यह नकारात्मक आचरण का संकेत है। यह ऐसी आंतरिक असंतुलित अवस्था को दर्शाता है जहाँ इच्छाएँ विवेक और नैतिकता पर हावी हैं।

तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥३॥

सभी नकारात्मक कार्यों और बुरी नीयत का त्याग करें, चिंतन करें और सार्वभौमिक चेतना का आश्रय लें। हानिकारक गुणों को त्यागने की यह अवस्था ईमानदारी और सामंजस्य की भावना को बढ़ावा देती है जिसमें व्यक्ति के विचार और कार्य, आपस में बँटे हुए महसूस नहीं होते। (३)

हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥

एकत्व के प्रति समर्पित व्यक्ति अपने विचार, मन, वचन और कर्म को पवित्र बनाए रखता है। यह समर्पण स्पष्ट अंतरात्मा को पोषित करता है जहाँ उत्थानकारी विचार पनपते हैं, शब्दों में सार्थकता होती है और कर्म सच्ची निष्ठा को प्रकट करते हैं।

जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥४॥

तपस्या करने, यज्ञ-भोज आयोजित करने, दान देने और कठोर साधना करने से हमें क्या लाभ मिल सकता है। यह परंपराएँ हमें याद दिलाती हैं कि कर्मकांड कभी-कभी केवल प्रतीकात्मक क्रियाओं में सिमटकर रह जाते हैं जिससे हमारा अपने आप से जुड़ाव धुंधला पड़ जाता है और हमारी आध्यात्मिक उन्नति में बाधा आती है। (४)

गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥

हे प्यारे साथी मनुष्य, उस शाश्वत एकता के स्वरूप पर चिंतन करो, यही प्रबुद्ध व्यक्तियों की समस्त आध्यात्मिक उपलब्धियों का परम स्थान है। यह गहन स्पष्टता और अंततः आत्मबोध की भी नींव का आधार तैयार करता है।

जैदेव आइउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ॥५॥१॥

जयदेव कहते हैं कि चिंतन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वह सर्वव्यापी चेतना अस्तित्व की सभी अवस्थाओं, अतीत, वर्तमान और जीवन के समस्त रूपों में निरंतर प्रवाहित है। यह दृष्टिकोण उस परस्पर जुड़ाव को उजागर करता है जो समस्त जीवित प्राणियों को इस विशाल ब्रह्मांडीय चेतना के भव्य ताने-बाने में एक सूत्र में पिरोए रखता है। (५)(१)

तत्त्व: भगत जयदेव प्रभावशाली ढंग से कहते हैं कि चिंतन और आत्म-मंथन करने से हमारी समझ और भी गहरी होती है। आत्म-निरीक्षण की यह यात्रा उजागर करती है कि ब्रह्मांड का हर पहलू ऐसी अदृश्य, असीम और सर्वव्यापी ऊर्जा को दर्शाता है जो सभी चीज़ों को आपस में जोड़ती है। इस सच्चाई को पूरे दिल से अपनाकर, कि कुछ न तो खोता है और न ही कुछ हासिल होता है, जैसे अनंत

सागर में लहरें उठती हैं और फिर उसी में समा जाती हैं, हम अपने डर से ऊपर उठ सकते हैं और उन्हें पूरी तरह से मिटा सकते हैं। अपने मन को इस परिवर्तनकारी अनुभव के लिए खोलकर, हम उन चिंताओं और शंकाओं से स्वयं को मुक्त कर सकते हैं जो हमें आगे बढ़ने से रोकती हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com